

# NCERT Solutions for Class 12 History Chapter 7 एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर

## अभ्यास-प्रश्न

उत्तर दीजिए (लगभग 100-150 शब्दों में ) ।

प्रश्न 1. पिछली दो शताब्दियों में हम्पी के भग्नावशेषों के अध्ययन में कौन-सी पद्धतियों का प्रयोग किया गया है? आपके अनुसार यह पद्धतियाँ विरुपाक्ष मंदिर के पुरोहितों द्वारा प्रदान की गई जानकारी को किस प्रकार पूरक रहीं?

उत्तर: विजयनगर अर्थात् 'विजय का शहर' एक शहर तथा साम्राज्य दोनों के लिए प्रयुक्त नाम था। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई० में हरिहर तथा बुक्का राय नामक दो भाइयों ने की थी। 1565 ई० में तालीकोटा के युद्ध के परिणामस्वरूप होने वाली भयंकर लूटपाट के कारण विजयनगर निर्जन हो गया था। 17वीं-18वीं शताब्दियों तक पहुँचते-पहुँचते यह नगर पूरी तरह से विनाश को प्राप्त हो गया, फिर भी कृष्णा-तुंगभद्री दोआब क्षेत्र के निवासियों की स्मृतियों में यह जीवित बना रहा। उन्होंने इसे हम्पी नाम से याद रखा। आधुनिक कर्नाटक राज्य का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जिसे 1976 ई० में राष्ट्रीय महत्त्व के स्थान के रूप में मान्यता मिली। हम्पी के भग्नावशेषों के अध्ययन में पिछली दो शताब्दियों में अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

1. हम्पी के भग्नावशेषों के अध्ययन में सर्वप्रथम सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। 1800 ई० में ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में नियुक्त एक अभियंता एवं पुराविद् कर्नल कॉलिन मैकेन्जी द्वारा हम्पी के भग्नावशेषों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया। उन्होंने इस स्थान का पहला सर्वेक्षण मानचित्र बनाया।

2. कालान्तर में छाया चित्रकारों में हम्पी के भवनों के चित्रों का संकलन प्रारंभ कर दिया। 1856 ई0 में अलेक्जेंडर ग्रनिलों ने हम्पी के पुरातात्विक अवशेषों के पहले विस्तृत चित्र लिए। इसके परिणामस्वरूप शोधकर्ता उनकी अध्ययन करने में समर्थ हो गए। 3. हम्पी की खोज में अभिलेखकर्ताओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। अभिलेखकर्ताओं ने 1836 ई0 से ही यहाँ और हम्पी के मन्दिरों से दर्जनों अभिलेखों को एकत्र करना प्रारंभ कर दिया था ।

4. हम्पी के भग्नावशेषों के अध्ययन में विदेशी यात्रियों के वृत्तान्तों का भी अध्ययन किया गया। इतिहासकारों ने इन स्रोतों का विदेशी यात्रियों के वृत्तान्तों और तेलुगु, कन्नड़, तमिल एवं संस्कृत में लिखे गए साहित्य से मिलान किया। इनसे उन्हें साम्राज्य के इतिहास के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण सहायता मिली।

5. 1876 ई0 में जे0एफ0 फ्लीट ने पुरास्थल के मंदिर की दीवारों के अभिलेखों का प्रलेखन प्रारंभ किया। विरुपाक्ष मन्दिर के पुरोहितों द्वारा प्रदत्त सूचनाओं की पुष्टि ।

निःसंदेह ये पद्धतियाँ विरुपाक्ष मन्दिर के पुरोहितों द्वारा प्रदत्त सूचनाओं की पूरक थीं। उल्लेखनीय है कि मैकेन्जी द्वारा प्राप्त प्रारंभिक जानकारियाँ विरुपाक्ष मन्दिर और पम्पा देवी के मन्दिर के पुरोहितों की स्मृतियों पर आधारित थीं। उदाहरण के लिए, स्थानीय परंपराओं से पता चलता है कि तुंगभद्रा नदी के किनारे से लगे शहर के उत्तरी भाग की पहाड़ियों में स्थानीय मातृदेवी पम्पा देवी ने राज्य के संरक्षक देवता और शिव के एक रूप विरुपाक्ष से विवाह के लिए तपस्या की थी। विरुपाक्ष पम्पा की तपस्या से प्रसन्न होकर उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें हेमकूट में आने का निमंत्रण दिया। परिणय सूत्र में बँध जाने के बाद पम्पा ने विरुपाक्ष से अनुरोध किया कि उस स्थल का नामकरण उनके नाम के आधार पर किया जाए। विरुपाक्ष ने अनुरोध मान लिया और तब से इस स्थल का नाम पम्पा हो गया। हम्पी इसका बदला हुआ स्थानीय नाम है।

आज भी प्रतिवर्ष विरूपाक्ष मन्दिर में इस विवाह समारोह का आयोजन अत्यधिक धूमधाम से किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि चिरकाल से यह क्षेत्र अनेक धार्मिक मान्यताओं से संबद्ध था। विद्वान इतिहासकारों का विचार है कि विजयनगर के स्थान का चुनाव वहाँ विरूपाक्ष और पम्पा देवी के मन्दिरों के अस्तित्व से प्रेरित होकर ही किया गया था। हमें याद रखना चाहिए कि विजयनगर के शासक विरूपाक्ष देवता के प्रतिनिधि के रूप में शासन करने का दावा करते थे। विजयनगर के सभी राजकीय आदेशों पर सामान्यतः कन्नड़ लिपि में 'श्री विरूपाक्ष' लिखा होता था। समकालीन स्रोतों से पता लगता है कि विजयनगर के शासक 'हिन्दु सूरतराणा' की उपाधि धारण करते थे, जो देवताओं से उनके घनिष्ठ संबंधों की परिचायक थी।

**प्रश्न 2. विजयनगर की जल-आवश्यकताओं को किस प्रकार पूरा किया जाता था?**

**उत्तर:** तत्कालीन विजयनगर जैसे विशाल साम्राज्य को जलापूर्ति विशेषतः तुंगभद्रा नदी की द्रोणी से हुआ करती थी जो विजयनगर साम्राज्य के उत्तर-पूर्व में बहती है। इसके आस-पास मुख्य रूप से ग्रेनाइट की पहाड़ियाँ विस्तृत रूप से फैली हुई हैं जिन्होंने उस समय के विजयनगर शहर को चारों ओर से घेरा हुआ था। इन पहाड़ियों से निकलने वाली अनेक जल-धाराएँ विजयनगर साम्राज्य को लाभान्वित करती थीं। विजयनगर साम्राज्य में लगभग सभी जल-धाराओं के साथ-साथ बाँध बनाकर विभिन्न आकारों के तालाब अथवा जलाशय बनाए गए थे, क्योंकि विजयनगर शहर वहाँ के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था। अतः पानी को एकत्र करके शहर तक ले जाने के लिए विशेष प्रबन्ध किए गए थे।

यहाँ के सबसे महत्वपूर्ण जलाशय कमलपुरम् का निर्माण 15वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में हुआ जिसके पानी से न केवल आस-पास के खेतों को सींचा जाता था, अपितु इसे एक नहर के माध्यम से शाही केन्द्र तक भी ले जाया गया था। कमलपुरम् जलाशय के अतिरिक्त हिरिया नहर एक अन्य महत्वपूर्ण नहर थी जिसमें तुंगभद्रा पर बने बाँध से पानी लाया जाता था। इस जल का

प्रयोग धार्मिक केन्द्र से शहरी केन्द्र को पृथक् करने वाली घाटी की सिंचाई करने के लिए किया जाता था। उपर्युक्त के अतिरिक्त जनसामान्य के लिए जल के मुख्य स्रोत कुएँ, जलाशय इत्यादि ही थे। संक्षेप में, विजयनगर की जल-व्यवस्था अति उच्च स्तर की थी।

**प्रश्न 3. शहर के किलेबन्द क्षेत्र में कृषि क्षेत्र को रखने के आपके विचार में क्या फायदे और नुकसान थे?**

**उत्तर:** इसके मुख्य लाभ तथा हानियों का विवरण निम्नलिखित है

**लाभ**

1. इससे आक्रमणकारियों से खाद्य सामग्री को नुकसान नहीं पहुँचता था।
2. आक्रमणकारी खाद्य सामग्री तक नहीं पहुँच पाते थे।
3. जब शत्रु सेना द्वारा दुर्ग की घेराबन्दी अनेक वर्षों तक रहती थी तो उस समय राज्य में अन्न का संकट उत्पन्न नहीं होता था।
4. इस नगर में नहरों द्वारा जो जल आता था उससे सिंचाई में सुगमता रहती थी।
5. किलेबन्द शहर पशुओं से सुरक्षित था; अतः फसल को कोई हानि नहीं होती थी।

**नुकसान:**

1. शहर में भूमि की कमी हो जाती थी।
2. इस व्यवस्था में बहुमूल्य जल की अत्यधिक आवश्यकता होती थी।
3. दुर्ग में कृषि अधिक महँगी पड़ती थी। शत्रुओं द्वारा किले की घेराबन्दी लम्बे समय तक होने पर किसानों के लिए बहुत-सी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती थीं; जैसे-बीज, खाद आदि की व्यवस्था करना बहुत कठिन हो जाता था और कृषि प्रभावित होती थी।

**प्रश्न 4. आपके विचार में महानवमी डिब्बा से सम्बद्ध अनुष्ठानों का क्या महत्व था?**

**उत्तर:** महानवमी डिब्बा से संबद्ध अनुष्ठान सितंबर एवं अक्टूबर के शरद महीनों में 10 दिनों तक मनाया जाने वाला हिंदू त्योहार था। इस अनुष्ठान को उत्तर भारत में दशहरा, बंगाल में दुर्गा पूजा और प्रायद्वीपीय भारत में महानवमी के नाम से निष्पादित किए जाते थे। इस अवसर पर विजयनगर के शासक अपने रुतबे, ताकत तथा सत्ता की शक्ति का प्रदर्शन करते थे।

इस अवसर पर होने वाले अनुष्ठानों में मूर्तिपूजा, अश्व-पूजा के साथ-साथ भैंसों तथा अन्य जानवरों की बलि दी जाती थी। नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धा तथा घोड़ों, हाथियों तथा रथों व सैनिकों की शोभा यात्राएँ निकाली जाती थीं। साथ ही, प्रमुख नायकों और अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा को प्रदान की जाने वाली औपचारिक भेंट इस अवसर के प्रमुख आकर्षण थे। त्योहार के अंतिम दिन राजा सेनाओं का निरीक्षण करता था। साथ ही नए सिरे से कर निर्धारित किए जाते थे।

**प्रश्न 5. चित्र 7.1 विरुपाक्ष मंदिर के एक अन्य स्तंभ का रेखाचित्र है। क्या आप कोई पुष्प-विषयक रूपांकन देखते हैं? किन जानवरों को दिखाया गया है? आपके विचार में उन्हें क्यों चित्रित किया गया है? मानव आकृतियों का वर्णन कीजिए**

**उत्तर:** विरुपाक्ष मन्दिर के इस स्तम्भ को ध्यानपूर्वक देखने से पता लगता है कि इस स्तम्भ में अनेक पुष्पों के चित्रों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों की आकृतियों को भी चित्रित किया गया है। इसमें मोट, घोड़ा जैसे पक्षियों और पशुओं की आकृतियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। ऐसा लगता है कि इस समय मन्दिर धार्मिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों के केंद्र बिन्दु थे। मन्दिरों को अनेक प्रकार के चित्रों से सजाया जाता था। स्तम्भ पर की गई चित्रकारी को देखकर लगता है कि उस समय यह कला विशेष रूप से उन्नत

थी। स्तम्भ पर बने चित्रों से स्पष्ट होता है कि उस समय मूर्तिपूजा का प्रचलन था। मन्दिरों में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा की जाती थी। अनेक पशु-पक्षियों; जैसे-सिंह, मोर, उल्लू, गुरुड़ आदि को देवी-देवताओं के वाहन चित्र 71 . विरुपाक्ष मन्दिर का स्तम्भ मानकर उनकी भी पूजा की जाती थी।

वैष्णव धर्म और शैव धर्म उस समय के लोकप्रिय धर्म थे। वैष्णव धर्म में परमेश्वर के रूप में विष्णु की पूजा-आराधना की जाती थी। अवतारवाद की भावना-वैष्णव धर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। इसमें विष्णु के अवतारों की पूजा पर बल दिया जाता था। यह विश्वास किया जाता था कि, जब-जब धरती पर पाप बढ़ जाते हैं और धर्म संकट में पड़ जाता है, तब-तब धरती और मानवता की रक्षा के लिए विष्णु अवतार लेते हैं। वैष्णव धर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता विष्णु की पत्नी के रूप में लक्ष्मी अथवा श्री की परिकल्पना किया जाना था। लक्ष्मी की पूजा-आराधना धन-सम्पन्नता और समृद्धि की देवी के रूप में की जाती थी। शैव धर्म के साथ-साथ शाक्त, कार्तिकेय और गणपति जैसे सम्प्रदाय भी इस काल में पर्याप्त लोकप्रिय थे। वस्तुतः धार्मिक सहनशीलता इस काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी।

**निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए (लगभग 250-300 शब्दों में)**

**प्रश्न 6. 'शाही केंद्र' शब्द शहर के किस भाग के लिए प्रयोग किए गए हैं, क्या वे उस भाग का सही इन शब्द अड वर्णन करते हैं?**

**उत्तर:** विजयनगर साम्राज्य में शाही केन्द्र अथवा राजकीय केन्द्र बस्ती के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित थे। इसे राजकीय केन्द्र अवश्य कहा गया है, किन्तु इसमें 60 से भी अधिक मन्दिर हैं जिससे ज्ञात होता है कि राज्य द्वारा मन्दिरों को संरक्षण प्रदान किया जाता था। सामान्यतः इसका मुख्य कारण यह था कि इन देव-स्थलों में प्रतिष्ठित देवी-देवताओं से सम्बन्ध जोड़कर शासक अपनी सत्ता को वैध तथा दैवीय दर्शाते थे। इतिहासकारों ने लगभग राजकीय केन्द्र की तीस इमारतों की पहचान महलों के रूप में की है। ये महल अपेक्षाकृत

बड़े भवन थे, जो धार्मिक क्रियाकलापों के लिए नहीं थे। इन इमारतों तथा मन्दिरों के मध्य एक बड़ी भिन्नता यह थी कि ये मन्दिर पूरी तरह राजगीरी से निर्मित थे, जबकि अन्य इमारतें प्रायः नष्टप्राय वस्तुओं से बनाई गई थीं। विजयनगर साम्राज्य के राजकीय केन्द्र में स्थापित प्रमुख भागों का विवरण निम्नलिखित हैं .

### **राज्य-भवन अथवा राजा का भवन:**

विजयनगर साम्राज्य के राजकीय केन्द्र की कुछ अधिक विशिष्ट संरचनाओं के नाम भवनों के आकार तथा उनके कार्यों के आधार पर रखे गये हैं। इसमें राजा का भवन नामक संरचना सबसे विस्तृत है, किन्तु हमें इसके राजकीय आवास होने का कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है। इसके दो सबसे प्रभावशाली मंच हैं, जिन्हें सभा-मण्डप तथा महानवमी डिब्बा कहा जाता है।

### **सभा-मण्डप:**

राजकीय केन्द्र में सभा-मण्डप एक ऊँचा मंच है, जिसमें पास-पास तथा निश्चित दूरी पर लकड़ी के स्तम्भों के लिए छेद बने हुए हैं। इसमें इन स्तम्भों पर टिकी दूसरी मंजिल तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। स्तम्भों के एक-दूसरे से अधिक समीप होने के कारण यहाँ अत्यधिक न्यून खुला स्थान रहता है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह मंडप किस कार्य के लिए शासकों द्वारा बनवाए गए थे।

प्रमुख इतिहासकारों का मानना है कि इस राजकीय संरचना के चारों ओर का स्थान सशस्त्र पुरुषों तथा स्त्रियों एवं बड़ी संख्या में जानवरों के प्रदर्शन के लिए उचित नहीं था। अतः राजकीय केन्द्र में स्थित अनेक संरचनाएँ आज भी एक पहली बनी हुई हैं। 'शाही' केन्द्र प्रायः राजमहलों, किलों, राजदरबारों और राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र होता है, परन्तु इस केन्द्र में मन्दिरों की अधिकता से अनुमानतः यह प्रतीत होता है कि 'शाही केन्द्र' शब्द शहर के

जिस भाग के लिए प्रयोग किए गए हैं, वे उस भाग का सही वर्णन नहीं करते हैं।

**प्रश्न 7.** कमल महल और हाथियों के अस्तबल जैसे भवनों का स्थापत्य हमें उनके बनवाने वाले शासकों के विषय में क्या बताता है ?

**उत्तर:** विजयनगर के लगभग सभी शासकों की स्थापत्य कला में विशेष रुचि थी। मध्यकालीन अधिकांश राजधानियों के समान विजयनगर की संरचना में भी विशिष्ट भौतिक रूपरेखा तथा स्थापत्य शैली परिलक्षित होती है। अनेक पर्वतश्रृंखलाओं के मध्य स्थित विजयनगर एक विशाल शहर था। इसमें अनेक भव्य महल, सुन्दर आवास-स्थान, उपवन और झीलें थीं जिनके कारण नगर देखने में अत्यधिक आकर्षक एवं मनमोहक लगता था। बस्ती के दक्षिण-पश्चिमी भाग में शाही केन्द्र स्थित था जिसमें अनेक महत्वपूर्ण भवनों को बनाया गया था। लोटस महल अथवा कमल महल और हाथियों का अस्तबल इसी प्रकार की दो महत्वपूर्ण संरचनाएँ थीं। इन दोनों संरचनाओं से हमें उनके निर्माता शासकों की अभिरूचियों एवं नीतियों के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। शाही केन्द्र के भव्य महलों में सर्वाधिक सुन्दर कमल महल था।

यह नामकरण इस महल की सुंदरता एवं भव्यता से प्रभावित होकर अंग्रेज़ यात्रियों द्वारा किया गया था। स्थानीय रूप से इस महल को चित्तरंजनी - महल के नाम से जाना जाता है। यह दो मंज़िलों वाला एक खुला चौकोर मंडप है। नीचे की मंज़िल में पत्थर का एक सुसज्जित अधिष्ठान है। ऊपर की मंज़िल में खिड़कियों वाले कई सुन्दर झरोखे हैं। कमल महल में नौ मीनारें थीं। बीच में सबसे ऊँची मीनार थी और आठ मीनारें उसकी भुजाओं के साथ-साथ थीं। महल की मेहराबों में इंडो-इस्लामी तकनीकों का स्पष्ट प्रभाव था, जो विजयनगर शासकों की धर्म-सहनशीलता की नीति का परिचायक है। अभी तक विद्वान इतिहासकार इस विषय पर एकमत नहीं हो सके हैं कि इस महल का निर्माण किस प्रयोजन अथवा कार्य के लिए किया गया था।

संभवतः यह एक परिषद भवन था, जहाँ राजा और उसके परामर्शदाता विचार-विमर्श के लिए मिलते थे। हाथियों का विशाल फीलखाना (हाथियों का अस्तबल अथवा रहने का स्थान ) कमल महल के समीप ही स्थित था। फीलखाना की विशालता से स्पष्ट होता है कि विजय नगर के शासक अपनी सेना में हाथियों को अत्यधिक महत्त्व देते थे। उनकी विशाल एवं सुसंगठित सेना में हाथियों की पर्याप्त संख्या थी। फीलखाना की स्थापत्य कला शैली पर इस्लामी स्थापत्य कला शैली का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसके निर्माण में भारतीय इस्लामी स्थापत्य कला शैली का अनुसरण किया गया है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विजय नगर के शासक धार्मिक दृष्टि से उदार एवं सहनशील थे।

**प्रश्न 8. स्थापत्य की कौन-कौन सी परम्पराओं ने विजयनगर के वास्तुविदों को प्रेरित किया? उन्होंने इन परम्पराओं में किस प्रकार बदलाव किए?**

**अथवा किन्हीं दो स्थापत्य परंपराओं का उल्लेख कीजिए जिन्होंने विजयनगर के वास्तुविदों को प्रेरित किया। उन्होंने इन परंपराओं का मंदिर स्थापत्य में किस प्रकार प्रयोग किया? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर:** विजयनगर के लगभग सभी शासकों की स्थापत्यकला में विशेष अभिरूचि थी। अतः उनके शासनकाल में स्थापत्यकला का विशेष विकास हुआ। स्थापत्य की परम्परागत सभी परम्पराओं ने विजयनगर के वास्तुविदों को प्रभावित किया, किन्तु उन्होंने आवश्यकता एवं समय के अनुसार इन परम्पराओं में अनेक परिवर्तन भी किए। विजयनगर अर्थात् 'विजय का शहर' एक शहर और राज्य दोनों के लिए प्रयुक्त नाम था। कृष्णदेव राय विजयनगर का महानतम शासक था। उसके काल में स्थापत्यकला का विशेष विकास हुआ। उसने अपनी माता के नाम पर विजयनगर के निकट नगलपुरम् नामक उपनगर की स्थापना की, जिसमें उसने अनेक भव्य भवनों एवं मंदिरों का निर्माण करवाया। उल्लेखनीय है कि विजयनगर साम्राज्य के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में धर्म और धार्मिक वर्गों का महत्त्वपूर्ण स्थान था।

राजा स्वयं को देवता विशेष का प्रतिनिधि बताते थे और स्वयं को ईश्वर से जोड़ने के लिए मन्दिर निर्माण की गतिविधियों को प्रोत्साहित करते थे। राजधानी के रूप में विजयनगर के स्थान का चुनाव भी संभवतः वहाँ विरुपाक्ष और पम्पा देवी के मन्दिरों के अस्तित्व से प्रेरित होकर किया गया था। इस काल में मन्दिर राजत्व के स्थायित्व के प्रमुख आधार थे। संप्रदायी मुखिया राजाओं और मन्दिरों के मध्य एक पुल का काम करते थे। परिणामस्वरूप विजयनगर साम्राज्य में मन्दिर स्थापत्यकला का विशेष विकास हुआ। प्राचीन काल से ही मंदिर निर्माण क्षेत्र में स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियों-नागर शैली, द्रविड़ शैली और बेसर शैली का प्रचलन था। ये तीनों शैलियाँ मन्दिरों के आकार-प्रकार और भौगोलिक विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती थीं। नागर शैली के मन्दिर चौकोर आकार के होते थे, द्रविड़ शैली के मंदिर अष्टकोणीय होते थे और बेसर शैली के मन्दिर बहुकोणीय होते थे। सामान्य रूप से नागर शैली उत्तरी और द्रविड़ शैली दक्षिण मंदिर का प्रतिनिधित्व करती थी।

स्थापत्य की प्रचलित सभी परंपराओं ने विजयनगर के वास्तुविदों को प्रभावित किया। उन्होंने इनमें कुछ परिवर्तन भी किए। उल्लेखनीय है कि दक्षिण भारतीय राजशाही में वंशपरंपरा की एक प्रमुख विशेषता वंश देवता की सामूहिक भक्ति थी। अतः 1350 ई०-1650 ई० की अवधि में दक्षिण भारत में अनेक महत्वपूर्ण मन्दिरों का निर्माण हुआ। विजयनगर के शासकों ने मन्दिरों से संबद्ध पूर्वकालिक परम्पराओं के अनुसरण के साथ-साथ उन्हें नवीनता प्रदान की तथा और विकसित किया। राजकीय प्रतिकृति मूर्तियों को मन्दिर में प्रदर्शित किया जाने लगा तथा राजा की मन्दिर यात्रा को महत्वपूर्ण राजकीय अवसर माना जाने लगा। गोपुरम् और मंडप जैसी विशाल संरचनाएँ इस काल के मंदिर स्थापत्य की महत्वपूर्ण विशेषताएँ बन गईं। इन संरचनाओं का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उदाहरण टायगोपुरम् अथवा राजकीय प्रवेशद्वारों में मिलता है।

गोपुरम् बहुत दूर से ही मन्दिर होने का संकेत देते थे। इनकी ऊँचाई और भव्यता के सामने केन्द्रीय देवालयों की दीवारें प्रायः बौनी-सी प्रतीत होती थीं।

मंदिर परिसर में स्थित देवस्थलों के चारों ओर मंडप और लम्बे स्तम्भों वाले गलियारे भी बनाए जाने लगे। विजयनगर के शासकों ने विरुपाक्ष के प्राचीन मंदिर में गोपुरम् और मंडप जैसी अनेक संरचनाओं को जोड़कर इसके आकार को और अधिक बढ़ा दिया। कृष्णदेव राय ने अपने राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में मुख्य मन्दिर के सामने एक भव्य मंडप का निर्माण करवाया। इस मंडप को सुंदर उत्कीर्ण चित्रों वाले स्तम्भों से सुसज्जित किया गया था। इसके पूर्वी गोपुरम् के निर्माण का श्रेय भी कृष्णदेव राय को ही दिया जाता है। मन्दिर में कई सभागारों का निर्माण करवाया गया था। सभागारों का प्रयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता था।

कुछ सभागारों में संगीत, नृत्य और नाटकों के विशेष कार्यक्रमों को देखने के लिए देवताओं की मूर्तियों को रखा जाता था। कुछ अन्य सभागारों में देवी-देवताओं के विवाह समारोहों का आयोजन किया जाता था तो कुछ का प्रयोग देवी-देवताओं को झूला झुलाने के लिए किया जाता था। विजयनगर के वास्तुविदों ने दिल्ली सुल्तानों के स्थापत्य की दो महत्वपूर्ण विशेषताओं का समावेश अपनी स्थापत्यशैली में किया। किलेबन्द बस्ती में जाने के लिए बनाए गए प्रवेश द्वार पर बनाई गई मेहराब और द्वार पर बना गुम्बद इस काल के प्रवेश द्वार स्थापत्य की महत्वपूर्ण विशेषताएँ थीं। इन दोनों विशेषताओं को दिल्ली सुल्तानों के स्थापत्य के चारित्रिक तत्व माना जाता है।

स्थापत्यकला की इस शैली का विकास इस्लामिक कला के विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय स्थापत्य की परम्पराओं के संपर्क में आने के परिणामस्वरूप हुआ था, अतः कला इतिहासकारों ने इसे स्थापत्य की इंडो-इस्लामिक कला शैली का नाम दिया है। इसी प्रकार विजय नगर के शहरी केन्द्र में उपलब्ध मकबरों एवं मस्जिदों की स्थापत्यकला शैली और हम्पी में उपलब्ध मन्दिरों के मंडपों के स्थापत्य में अनेक महत्वपूर्ण समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। कमल महल की स्थापत्यकला शैली को भी इस्लामी स्थापत्यकला शैली ने पर्याप्त सीमा तक प्रभावित किया। कमल महल में नौ मीनारें थीं। बीच में सबसे ऊँची मीनार थी

और आठ मीनारें उसकी भुजाओं के साथ-साथ थीं। महल की मेहराबों में इंडोइस्लामी तकनीकों का स्पष्ट प्रभाव झलकता है।

**प्रश्न 9. अध्याय के विभिन्न विवरणों से आप विजयनगर के सामान्य लोगों के जीवन की क्या छवि पाते हैं?**

**उत्तर:** प्रसिद्ध पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने विवरण दिया है कि सामान्य व्यक्तियों का जीवन साधारण ही था। वे प्रायः छप्पर के आवासों में रहते थे, किन्तु वे अधिक सुदृढ़ होते थे। विजयनगर के सामान्य लोगों की जीविका का मुख्य साधन कृषि थी तथा विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न, फूलों तथा सब्जियों की कृषि की जाती थी। विजयनगर के लोग चावल, गेहूँ, अनाज, मकई, जौ, मूंग, काले चने तथा दालों का प्रयोग करते थे। वे माँसाहारी भी होते थे। नूनिज के अनुसार, विभिन्न जानवरों तथा पक्षियों का माँस विजयनगर के नागरिक प्रायः खाया करते थे।

विजयनगर साम्राज्य के राजाओं का दक्षिण के सुल्तानों से निरन्तर संघर्ष चलता रहता था। अतः सैन्य व्यय तथा वैभवपूर्ण इमारतों के निर्माण हेतु अधिक धन की आवश्यकता ने भी उत्पादक वर्ग; जैसे-किसान तथा मजदूरों पर अधिक नकारात्मक प्रभाव डाला, जिससे वे आवश्यकता से अधिक धन प्राप्त नहीं कर पाते थे। उनके आवासों का छप्परयुक्त होना इसका प्रमाण है।

विभिन्न यात्रियों के विवरण बताते हैं कि ब्राह्मण माँस नहीं खाते थे तथा उनका समाज में उच्च स्थान था। यहाँ के पुरुष धोती, कुर्ता, कमीज, टोपी अथवा पगड़ी पहनते थे तथा कन्धे पर एक दुपट्टा भी प्रयोग करते थे। स्त्रियाँ धोती और चोली पहनती थीं। यद्यपि उच्च वर्गों में अन्तःवस्त्रों को पहनने की भी परम्परा थी। साधारण नागरिक जूता नहीं पहनते थे, जबकि धनी वर्ग में प्रायः जूतों का प्रयोग होता था। संक्षेप में, विजयनगर का नागरिक-जीवन सरल था तथा उसमें धार्मिक एवं सामाजिक कट्टरता नहीं थी। क्षेत्रीय सर्वेक्षणों से

ज्ञात होता है कि विजयनगर में अनेक धार्मिक स्थल थे जो विभिन्न सम्प्रदायों से सम्बन्धित थे और विभिन्न समुदायों द्वारा संरक्षित थे।